

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५७

विदेह बज्जिका लेखन-शैली निर्देशिका

५७

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५७

विदेह बज्जिका लेखन-शैली निर्देशिका

आशीष अनचिन्हार | विदेह · २०२६

स्रोताधारित साहित्यिक आ भाषिक अध्ययन

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ५७ । सम्पादक: आशीष अनचिन्हार ।

प्रथम प्रकाशन: २०२६ । भाषा: मैथिली । मुद्रित आकार: ६ × ९ इञ्च । © २०२६

Gajendra Thakur / Preeti Thakur ।

एहि खण्डमे बज्जिकाक लेखन-शैली, स्थानीय भाषिक प्रयोग आ सम्पादन-विधानक विवेचन अछि ।

मूल ग्रन्थक लेखकीय कथनकें आलोचनाक निष्कर्ष बुझि नहि छापल गेल अछि ।
उद्धरण, उदाहरण, क्षेत्रीय रूप, वर्तनी-विकल्प आ मूल लेखकीय शैलीक प्रमाण-स्थिति सुरक्षित राखल गेल अछि ।

सम्पादकीय भूमिका : पाठ, प्रमाण आ समीक्षा

बज्जिकाक अपन शब्द, सर्वनाम, कारक आ क्रियारूपकें आधार मानैत
साहित्यिक भाषा आ क्षेत्रीय बोलचालक सम्बन्ध देखल गेल अछि ।

मूल ग्रन्थक अध्याय-विन्यासक संग पाठ-सन्दर्भ आ आलोचनात्मक विवेचन
प्रस्तुत अछि ।

विस्तृत अनुक्रम : खण्ड ५७

एहि अनुक्रममे मूल ग्रन्थक विभाग आ विषयसभ अपन क्रममे प्रस्तुत अछि ।

- १. बज्जिकाक अपन भाषिक अधिकार
- २. प्रमाणक पदानुक्रम
- ३. युनिकोड लिखाइ आ स्रोत-स्वर
- ४. सर्वनाम, सम्बन्ध आ आदर
- ५. क्रिया, अस्तित्व आ काल-पक्ष
- ६. वाक्य, नकार आ जोड़-शब्द
- ७. अनुवाद आ अतिमैथिलीकरण
- ८. प्रयोग-कोश आ पुनर्जाँच

- १. डिजिटल सम्पादन आ मानवीय जाँच
- मूल शैली-पोथीक क्रमवार विभाग, उपशीर्षक, तालिका आ परिशिष्ट

प्रथम भाग — विषयवार विस्तृत समालोचना

१. बज्जिकाक अपन भाषिक अधिकार

निर्देशिकाक आरम्भिक प्रतिज्ञा ई अछि, जे बज्जिकाक अपन शब्द, कारक, सर्वनाम आ वाक्यलयकें सुरक्षित राखल जाए। हिन्दी वाक्यक व्याकरण जसक तस राखि केवल लोकशब्द जोड़ब बज्जिका लेखन नहि, ओना मैथिली अथवा भोजपुरीक ढाँचा सीधा उतारब सेहो उपयुक्त नहि। “मिथिला-अभिमुख” पद एकटा संपादकीय प्राथमिकता अछि, भाषिक भिन्नताक निषेध नहि। दू समप्रमाणित विकल्प भेटला पर क्षेत्रीय परम्परा देखल जाए, मुदा प्रत्यक्ष बज्जिका स्रोत अधिक मजबूत हो तँ स्थानीय रूप अग्रगण्य रहत।

एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

अन्तरसम्बन्धक दृष्टिसँ एहि प्रकरणक पाठकें एकरे लगक खण्डसभ, मूल पोथीक अनुक्रम आ विदेहक अभिलेखीय परम्परासँ जोड़िकऽ पढ़ब उपयोगी अछि। एहन पठनसँ भाषा, साहित्य, इतिहास, पहुँच आ सम्पादनक प्रश्न परस्पर सम्वादमे अबैत अछि, मुदा अलग स्रोतक भेद नहि मेटैत।

२. प्रमाणक पदानुक्रम

विश्वसनीय मातृभाषी व्यवहार, पुरान साहित्य, लोकगीत, अनेक क्षेत्रक प्रयोग आ प्रामाणिक भाषावैज्ञानिक चर्चा अलग प्रकारक साक्ष्य अछि। वेबपर अधिक मिलब शुद्धताक पर्याप्त प्रमाण नहि। सम्पादकीय सुझाव आ ऐतिहासिक भाषा-वर्गीकरणक दावा अलग राखब आवश्यक अछि। एतय स्पष्टता निर्देशिकाक प्रमुख उपलब्धि अछि, कारण एकटा व्यावहारिक लेखन-निर्णय भाषाई वंशावलीक अन्तिम निर्णय नहि कहल जा सकैत।

३. युनिकोड लिखाइ आ स्रोत-स्वर

नव पुस्तक-प्रकाशनमे खोजयोग्य युनिकोड देवनागरीक उपयोग पाठकक सुविधा बढ़बैत अछि। यन्त्रपठित पुरान पाठमे मात्रा, अङ्क वा संयुक्ताक्षर बदलि गेल

हो, तँ मूल छवि वा विश्वसनीय प्रति देखिकेँ सुधार करवाक जरूरत अछि। मैथिली निर्देशिकाक नुक्ता अथवा शब्द-विभाजन नियम बज्जिकापर स्वतः लागू नहि होएत। ध्वनि-साक्ष्य आ प्रमाणित स्थानीय लेखनक आधारपर स्वतंत्र नियम चाही। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकेँ सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

४. सर्वनाम, सम्बन्ध आ आदर

हम, हमरा, हमर; तू, तोरा, तोहर; अपने सन रूप सामाजिक सम्बन्धक अनुसार अर्थ प्राप्त करैत अछि। सर्वनाम बदलबासँ क्रियाक आदर-स्तर बदलै सकैत अछि; एहि लेल व्यक्ति-सामञ्जस्यकेँ पूरे वाक्यमे जाँचल जाए। पात्रक उमेर, नाता, दूरी आ क्षेत्रीय बोलचाल कथे संवादक अन्तर बनबैत अछि। सभ पात्रकेँ एकहि “साफ” लहजा देनाइ साहित्यक बहुस्वरिताक क्षति होएत।

व्यक्ति, दूरी, सामाजिक सम्बन्ध आ सम्मानक बहुस्तरीय व्यवस्था एहि विषयक वास्तविक केन्द्रीय प्रश्न अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठकेँ क्रमसँ राखल गेल अछि।

एकहि व्यक्तिक रूपभेदकेँ वाक्यमे ओकर व्याकरणिक भूमिका आ सामाजिक प्रसंगसँ जोड़िकऽ पढ़ल जाए। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

५. क्रिया, अस्तित्व आ काल-पक्ष

ह, हइ, हई जकाँ रूप निर्देशनमे स्थानीय प्रयोगक उदाहरण रूपमे उपस्थित अछि। ई सबहक चुनाव कर्ता, काल, क्षेत्र आ कथनक स्तर पर निर्भर करैत अछि; हिन्दी “है” वा भोजपुरी “बा”क यान्त्रिक समकक्ष मानब कठिन अछि। घटना सम्पन्न भेल, जारी अछि, सम्भावित अछि अथवा आदतन होइत अछि—पहिले ई अर्थ पहिचानू। एक क्रियाक देखल प्रत्यय समस्त धातुपर स्वतः लागू करब स्रोतविहीन सामान्यीकरण अछि।

काल, पक्ष, भाव आ आदरकें एकटा मात्र प्रत्यय-सारणीमे समेटलासँ अर्थभेद ओझराएत। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

प्रत्येक क्रियारूपकें कर्ता, प्रसंग, पूर्ण वाक्य आ स्रोतसहित मिलेनाइ जरूरी अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

६. वाक्य, नकार आ जोड़-शब्द

वाक्यक प्रश्न, निषेध, सम्बन्धवाचक संरचना आ परसर्ग भाषा-विशिष्ट प्रबन्ध अछि। साझा मैथिली-बज्जिका शब्दाकृति देखिकें एकहि वाक्य-ढाँचा मानि लेब त्रुटिपूर्ण होएत। भाषिक स्पष्टता लेल प्रत्येक उदाहरणक संग प्रसंग देल जाए। जँ दू रूपक अर्थ भिन्न अछि तँ सम्पादकीय चयनक तर्क उदाहरणक भीतर देखेबा योग्य रह्य। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक, लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकें सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

शब्दक अर्थ, पद-श्रेणी आ प्रयोगक्षेत्रकें स्थिर कोशीय लेबलमे सीमित करब कठिन अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककें क्रमसँ राखल गेल अछि।

सहप्रयोग, वाक्य-सन्दर्भ, क्षेत्रविशेष आ ऐतिहासिक स्रोत जाँचिकऽ निर्णय करब समीचीन अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

७. अनुवाद आ अतिमैथिलीकरण

बज्जिका अनुवादक मूल चुनौती भाषिक अस्मिता बचबैत अर्थ सम्हारब अछि। अतिभोजपुरीकरण जतेक अस्वाभाविक भऽ सकैत अछि, अतिमैथिलीकरण सेहो ओतवे विकृति अनैत अछि। मानकक सरलता साहित्यिक गरीबी नहि अछि। लोकभाषाक सटीक मुहावरा, स्वाभाविक वाक्यलय आ सामाजिक सम्बोधन पुरान उद्धरणमे जसक तस संरक्षित रहब जरूरी अछि।

शब्द-प्रतिशब्द समानता अनुवादक पर्याप्त कसौटी नहि; अर्थ, विधा, लक्षित पाठक आ सांस्कृतिक संकेत साथ रहैत अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककै क्रमसँ राखल गेल अछि।

स्रोत आ लक्ष्यपाठक समानान्तर खण्डसँ अर्थ-हानि, अनावश्यक विस्तार आ शैली-विचलन चिन्हब जरूरी अछि। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

८. प्रयोग-कोश आ पुनर्जाँच

निर्देशिकाक स्रोत-सारणीकें “शब्द भेटल” आ “नव लेखकीय मानक लेल स्वीकृत” एहेन दू अलग अवस्थामे पढ़ल जाए। संदिग्ध रूप लेल पुनर्जाँचक श्रेणी राखब नव शब्द गढ़बाक अपेक्षा बेसी विश्वसनीय अछि। कथनकें साहित्यिक, क्षेत्रीय, ऐतिहासिक अथवा प्रयोगात्मक चिह्न देलासँ पाठक स्रोतक सीमा बुझि सकैत अछि। ध्वनि-रूपक तथ्य बिना मातृभाषी प्रमाणक नियम घोषित नहि कएल जाए।

भाषाक वास्तविक प्रयोग नियमक अपवाद नहि, कतेको बेर नियमक सीमा स्पष्ट करैत अछि। एहि कारण पाठ-निर्णयमे स्रोतक काल, विधा, संस्करण आ लक्ष्यपाठककै क्रमसँ राखल गेल अछि।

उद्धरण, संवाद, शिक्षण आ शोधमे एकहि रूपक भिन्न स्वीकृति-स्थिति सुस्पष्ट राखू। शोध-पद्धतिमे जे उदाहरण प्रकाशित ग्रन्थ अथवा सत्यापित वेबसाइटसँ निबद्ध नहि अछि, ओकरा स्वतन्त्र प्रमाणक दर्जा नहि देल जाए।

९. डिजिटल सम्पादन आ मानवीय जाँच

यन्त्रक खोज विकल्पक उपस्थिति चिह्नित करि सकैत अछि, लेकिन प्रसंगक अर्थ आ पात्रक स्वरक अन्तिम निर्णय मानव संपादककें देब पड़ैत अछि। यूनिकोड, लिंक, शीर्षक, अनुक्रम आ PDFक सुपाठ्यता प्रकाशन-पूर्व पृथक जाँच चाही। स्रोत-प्रमाण भिन्न रहितो बज्जिका अध्ययन मैथिली आ ठेठी-अंगिकाक संग तुलनात्मक संवाद खोलैत अछि। संवादक आधार समानता थोपब नहि, भिन्नता स्वीकार करब अछि। पाठ-साक्ष्यक प्रश्न : एहि प्रसंगमे मूल प्रकाशनक शीर्षक,

लिखित उदाहरण, क्षेत्र/विधा आ सम्पादकीय निर्णयक परिधि एक संग जाँचल जाए। उद्धरणक मूल अक्षररूपकेँ सुधारक नामपर नहि बदलब एहि समीक्षाक आवश्यक नीति अछि।

द्वितीय भाग — मूल शैली-पोथीक प्रत्येक विभागक विस्तृत समीक्षा

१. भाषिक पहिचान आ सम्पादकीय आधार

मूल पाठ — ई निर्देशिका विदेहक बज्जिका लेखनक व्यावहारिक मानक हइ। एकर मूल आग्रह हइ जे बज्जिका अपन शब्द, सर्वनाम, कारक, क्रिया, सम्बोधन आ लोकलयकेँ सुरक्षित रखय। हिन्दीमे वाक्य बनाकेँ ओकर शब्द बदलब बज्जिका लिखब नहि हइ; ओहिना मानक मैथिली वा भोजपुरीक ढाँचा जस-के-तस उठेब सेहो ठीक नहि।

मूल पाठ — मिथिला-अभिमुखताक अर्थ केवल एतेक हइ जे जँ दू प्रमाणित बज्जिका रूप समान रूपेँ स्वाभाविक हो, तँ मिथिलाक भाषिक परम्परासँ जुड़ल रूप साहित्यिक मानकमे प्राथमिकता पाबय। जँ ठेट बज्जिका आ मैथिली-सन्निकट रूपमे द्वन्द्व हो, तँ बज्जिकाक प्रमाणित स्थानीय रूप पहिने रहत।

मूल पाठ — ई पोथी नियमक संग प्रयोगक सीमा सेहो बतबैत हइ। कथा-वर्णन, शोधलेखन, लोकगीत, पात्रक संवाद आ सीमा-क्षेत्रक साक्षात्कारमे एकर समान कठोरता नहि लगाओल जायत। पाठकेँ पहिने ई बुझबाक चाही जे कोन रूप लेखकक चुनाव हइ आ कोन रूप मूल वक्ताक।

प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

समेकित निष्कर्ष — भाषा-अध्ययनमे लेखकीय सुसंगति महत्वपूर्ण अछि, मुदा ओ वास्तविक वक्ताक स्वर, स्रोतक मूल अक्षर अथवा भाषा-साम्पर्कक साक्ष्यक विकल्प नहि बनैत।

२. प्रमाणक पदानुक्रम आ निर्णय

मूल पाठ — पहिल प्रमाण विश्वसनीय मातृभाषी व्यवहार आ सम्पादकक स्पष्ट सुधार हइ। तकर बाद पुरान बज्जिका साहित्य, लोककथा, गीत, मुहावरा,

एकाधिक क्षेत्रक चलन आ प्रामाणिक भाषावैज्ञानिक विवेचन देखल जायत। इंटरनेटपर कोनो रूप अधिक बेर भेटलासँ ओ अपने-आप साहित्यिक मानक नहि बनि जाइत हइ।

मूल पाठ — दू स्रोतमे भिन्न रूप भेटला पर लेखक पहिले क्षेत्र, समय, विधा, पात्रक सामाजिक सम्बन्ध आ अर्थक भेद लिखय। एकर बादे निर्णय लेय। स्रोत अस्पष्ट हो तऽ निर्णयकेँ ‘पुनजाँच’ मानय, नव मानक घोषित नहि करय।

मूल पाठ — बज्जिका, मैथिली आ भोजपुरीमे साझा शब्द रहि सकैत हइ। कोनो शब्द भोजपुरीमे सुनाइत हइ ताहिसँ बज्जिकामे ओकर पुरान उपस्थिति नकारल नहि जाइत हइ; एके बात मैथिली-समान शब्दक लेल सेहो लागू हइ।

३. लिपि, युनिकोड आ वर्तनी

मूल पाठ — सामान्य पुस्तक, पत्रिका आ डिजिटल लेखन लेल युनिकोड देवनागरी अपनाओल जायत। एक शब्दक दू वर्तनीमेसँ जे प्रमाणित आ सुपाठ्य रूप चुनल जायत, ओकर प्रयोग एकरूप रहय; मुदा पात्रक बोली आ उद्धरणक अलग रूपकेँ मूल रूपमे राखल जाए।

मूल पाठ — अनुस्वार, चन्द्रबिन्दु, मात्रा, संयुक्ताक्षर, अवग्रह आ नुक्ताक प्रयोग शब्दक वास्तविक ध्वनि, स्रोतसाक्ष्य आ बज्जिकाक अपन वर्तनीक अनुसार होयत। शुद्ध मैथिली निर्देशिकाक केवल ‘ड/ढ’ नुक्ता-नियम बज्जिकापर स्वतः आरोपित नहि होयत; बज्जिकामे अलग निर्णय लेल प्रमाणित स्थानीय पाठ आवश्यक हइ।

मूल पाठ — पुरान छपाइ वा यन्त्रपठित दस्तावेजमे मात्रा बिगड़ल हो सकैत हइ। सन्दिग्ध रूपकेँ मूल पृष्ठ देखिकेँ मिलाउ। शुद्धि-यन्त्रक हिन्दी सुझावकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि करू।

लिपि, उच्चारण आ ध्वनिमक तीन अलग स्तर अछि; एकर अदलाबदलीमे सूचना-हानि भऽ सकैत अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — मूल कोडबिन्दु, Unicode सामान्यीकरण, राउण्ड-ट्रिप परीक्षण आ पाठक पठनीयता जाँचू। सम्पादकीय निर्देशकेँ समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

४. उच्चारण आ लिखबाक अन्तर

मूल पाठ — मौखिक बज्जिकामे ध्वनि-लोप, दीर्घता, बलाघात आ क्षेत्रीय फेरबदल भेटैत हइ। सभ सूक्ष्म ध्वनिभेदकेँ एक-एक करि सामान्य गद्य पर अंकित करब लेखन कठिन बना देत। जतेक अन्तर शब्दार्थ बदलैत हइ वा स्थापित वर्तनीमे आवश्यक हइ, ओतेकेँ स्थिर रूपेँ लिखू।

मूल पाठ — पुरान गीतक स्वर-विस्तार, संवादक स्वाभाविक ध्वनि-लोप, लोकवाचिक दोहराव आ कहावतक निसर्ग रूपकेँ ‘सुधार’ कहि मिटाउ नहि। मुख्य पाठमे प्रमाणित लेखनरूप आ आलोचनात्मक टिप्पणीक भीतर उच्चारणक भेद अलग राखब नीक पद्धति हइ।

मूल पाठ — नव शब्द गढ़बाक बदला तीन प्रश्न पूछू—ई रूप मातृभाषी बाजैत हइ? एकर अर्थ सुनिश्चित हइ? एकर वर्तनीक भरोसेमन्द स्रोत भेटैत हइ? नहि भेटला पर प्रयोग स्थगित करू।

५. सर्वनाम आ सम्बन्धसूचक रूप

मूल पाठ — हम, हमरा, हम्मर; तू, तोरा, तोहर; अपने आदि रूप मूल निर्देशिकामे बज्जिका प्रयोगक उदाहरण रूपेँ दर्ज हइ। ई सूची पूरा सर्वनाम-व्याकरण नहि, आरम्भिक मार्गदर्शक हइ। कोन रूप सामान्य, कोन आदरसूचक, कोन क्षेत्रविशेष —ई वाक्यक सामाजिक प्रसंग देखिकेँ तय करू।

मूल पाठ — सम्बन्धक रूपमे हम्मर, तोहर, ओकर जकाँ प्रमाणित रूपकेँ अनावश्यक हिन्दी ‘मेरा/तुम्हारा/उसका’ सँ नहि बदलू। उलटा, मैथिलीक सम्बन्धचिह्न ‘-क’ सभ ठाम आरोपित करब सेहो गलत हइ।

मूल पाठ — सर्वनाम बदलैत समय क्रियाकेँ सेहो जाँचब जरूरी हइ। पात्रक उमेर, नाता, सम्मान आ बोलबाक सम्बन्धक अनुसार सहायक-क्रिया आ सम्बोधन बदलि सकैत हइ। स्रोतमे विन्यास स्पष्ट नहि हो तऽ मनसँ सम्मानसूचक प्रत्यय नहि जोड़ू।

व्यक्ति, दूरी, सामाजिक सम्बन्ध आ सम्मानक बहुस्तरीय व्यवस्था एहि विषयक वास्तविक केन्द्रीय प्रश्न अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — एकहि व्यक्तिक रूपभेदकें वाक्यमे ओकर व्याकरणिक भूमिका आ सामाजिक प्रसंगसँ जोड़िकऽ पढल जाए। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

६. सम्बोधन, सम्मान आ पात्र-स्वर

मूल पाठ — सम्मान खाली ‘जी’ जोड़ि देब नहि हइ। सर्वनाम, क्रियाक रूप, आज्ञाक बल, विनय आ सम्बोधनक आपसी मेलसँ आदर प्रकट होइत हइ। एकहि व्यक्तिक लेल एक अनुच्छेदमे भिन्न आदर-स्तर नहि मिलाओल जायत, जँ धरि कथावस्तुमे बदलावक कारण न हो।

मूल पाठ — कथा-सम्पादनमे लेखक-वर्णन अपेक्षाकृत स्थिर रहि सकैत हइ; मुदा किसान, कारीगर, बच्चा, बूढ़, शिक्षित वा सीमा-क्षेत्रक पात्रक बोलचाल एक-दोसरासँ भिन्न हो सकैत हइ। सभ पात्रक वाणीकें एक ‘शुद्ध’ साँचा देब ओकर चरित्र नष्ट करैत हइ।

मूल पाठ — पुरान स्रोतमे ककरो सम्बोधन अपमानजनक हइ तँ समीक्षा ओकर उद्धरण आ मूल्यांकन अलग रखय। लेखकक मत आ पात्रक कथन बिना प्रमाण एक नहि ठहराओल जाए।

७. सहायक क्रिया आ अस्तित्ववाचक रूप

मूल पाठ — मूल बज्जिका निर्देशिकामे ह, हइ, हई आदि प्रमाणित स्थानीय रूपक उल्लेख अछि। ओहि रूपसभमे चयन व्यक्ति, वाक्य, क्षेत्र आ कथनरूपक आधारपर होयत। भोजपुरीक वा, बानी, बाड़े, बाड़ऽ, बाटे, हवे जकाँ रूपकें केवल दृश्य-माध्यमक प्रभावसँ सामान्य बज्जिका मानक नहि बनाउ।

मूल पाठ — भोजपुरीक रूप सम्पर्क-क्षेत्रक वास्तविक पात्र बोलैत हो, तँ ओकर शब्द हटाएब स्रोतक असत्यापन बनत। ओकरा केवल उद्धरण अथवा स्पष्ट क्षेत्रीय संवादमे राखू; लेखक-वर्णनक साधारण मानक रूपमे स्वतः नहि आनू।

मूल पाठ — ‘मैथिली-अभिमुख’ कहलासँ मैथिली अछि/छै सभ बज्जिका वाक्यमे लगाओल नहि जा सकैत हइ। एक अध्यायक वर्णनमे जे सहायक-क्रियाक मान्य परिवार अपनाओल गेल हो, ओकरा बिना कारण बारम्बार नहि बदलू।

काल, पक्ष, भाव आ आदरकें एकटा मात्र प्रत्यय-सारणीमे समेटलासँ अर्थभेद ओझराएत। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — प्रत्येक क्रियारूपकें कर्ता, प्रसंग, पूर्ण वाक्य आ स्रोतसहित मिलेनाइ जरूरी अछि। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

८. क्रियाक काल, पक्ष आ अर्थ

मूल पाठ — भूत, वर्तमान, अभ्यस्त, जारी क्रिया, पूर्णता, सम्भावना आ भविष्य — ई सभ अर्थ अलग परखबाक विषय हइ। हिन्दी ‘कर रहा है’ वा ‘करेगा’ देखिकें शब्द बदलि बज्जिका क्रिया नहि बनत। पहिले घटना कहिया घटैत हइ, ओ सम्पन्न कि चलि रहल हइ, वक्ता निश्चित कि सम्भावनात्मक कथन करैत हइ—ई निर्धारित करू।

मूल पाठ — एकक्रियाक उदाहरण जाँचिकें सभ क्रियापर एके प्रत्यय नहि थोपू। कर्ताक व्यक्ति, आदर आ स्थानीय क्रियापरम्परा देखिकें रूप चुनबाक चाही। अज्ञात क्रियाप्रत्यय कल्पनासँ जोड़बाक बदला वाक्यकें प्रमाणित सरल रूपमे फेर लिखू।

मूल पाठ — शैक्षिक अध्यायमे प्रत्येक क्रियारूपक संग स्रोत, क्षेत्र, अर्थ आ न्यूनतम पूरा वाक्य दियौ। अलग-थलग ‘रूप-सूची’ कथनक प्रयोगक प्रमाण नहि बनैत हइ।

काल, पक्ष, भाव आ आदरकें एकटा मात्र प्रत्यय-सारणीमे समेटलासँ अर्थभेद ओझराएत। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — प्रत्येक क्रियारूपकें कर्ता, प्रसंग, पूर्ण वाक्य आ स्रोतसहित मिलेनाइ जरूरी अछि। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

९. वचन, लिङ्ग आ सामञ्जस्य

मूल पाठ — हिन्दीमे स्त्री-पुरुष वा एकवचन-बहुवचन अनुसार जे क्रियाभेद होइत हइ, ओकरा बज्जिका पर बिना प्रमाण थोपल नहि जाए। बज्जिकाक वास्तविक व्याकरण जतेक भेद माँगैत हइ, ओतेक मात्र लागू करू।

मूल पाठ — बहुवचन समूह, सम्मानसूचक व्यक्ति आ सामान्य अनेकता एके बात नहि हइ। लोकसभ, घरक सदस्यसभ, सामानक बहुत रूप—ई अर्थमे लेखनरूप स्थानीय प्रयोगक अनुसार चुनू।

मूल पाठ — जँ कोनो रूप कई क्षेत्रमे भिन्न हइ, तँ पाठ्य-मानकमे प्राथमिक प्रयोग स्थिर राखू आ भिन्नताकें ‘क्षेत्रीय विकल्प’ रूपमे चिह्नित करू; एकर आधारपर कोनो भाषिक समुदायकें ‘गलत’ नहि कहू।

१०. कारक, परसर्ग आ पदसम्बन्ध

मूल पाठ — कर्ता, कर्म, सम्प्रदान, साधन, स्रोत, स्थान, सम्बन्ध आ उद्देश्य—एहि अर्थसम्बन्धक पहचान पहिने होयत। मैथिली केँ आ भोजपुरी के वा हिन्दी को परसर्गकें देखकर बज्जिकाक चिह्न चुनब ठीक नहि।

मूल पाठ — मूल निर्देशिकाक अनुसार स्थानीय प्रमाणित पदबन्ध प्राथमिक स्रोत हइ। एकहि वाक्यमे एके सम्बन्ध लेल बेर-बेर अलग परसर्ग राखब अनावश्यक असंगति पैदा करैत हइ। मुदा संवाद, लोकपाठ आ दस्तावेजक उद्धरण अपना पाठानुसार रहत।

मूल पाठ — सम्बन्धचिह्नक लिखन-फाँक, पदसँ सटेब वा अलग लिखब, परसर्गक दीर्घ रूप—ई सभ लेल प्रकाशन-संग्रहमे नमूना पाँति राखू। अर्थ-भेद रहला पर अलग टिप्पणी दिअ, अन्धाधुन्ध खोज-बदल नहि।

कारकक अर्थक सम्बन्ध आ ओकर प्रत्यक्ष परसर्ग-संकेत हमेशा एक-एक अनुपातमे नहि भेटैत अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — कर्तृत्व, साधन, सम्प्रदान, स्रोत आ स्थानक अर्थकें अलग उदाहरणसँ परखब आवश्यक अछि। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

११. नकार, प्रश्न आ विकल्प

मूल पाठ — मूल बज्जिका स्रोतमे नइ/नहि आदि नकारक उल्लेख अछि। सामान्य लेखक-वर्णनमे हिन्दी नहीं स्वतः स्वीकार नहि करब। नै, नइ, नहि आदि विकल्पक लेखन सम्भव हो सकैत हइ; वास्तविक क्षेत्रीय प्रमाण आ कथन-रजिस्टर अनुसार जाँचू।

मूल पाठ — कौन, कब, क्यों जकाँ हिन्दी शब्दकें वाक्यक ढाँचा समेत अनुवाद नहि करू। प्रश्नवाचकक मूल बज्जिका रूप स्थानीय स्रोतसँ निर्धारित करू। प्रश्नक उत्तर अपेक्षित हइ कि अलंकारिक बल, से विरामचिह्न आ शब्दक्रममे देखायल चाही।

मूल पाठ — नकारक स्थान बदलला पर वाक्यक आशय बदलि सकैत हइ। 'एतना नहि', 'नहि आयल', 'कहियो नहि' जकाँ भिन्न नकार-क्षेत्रकें एके समान न मानू; प्रामाणिक वाक्य देखिकें फेर लिखू।

१२. वाक्य-विन्यास आ गद्यक चालि

मूल पाठ — बज्जिकाक सामान्य वाक्यमे कर्ता-कर्म-क्रिया क्रम उपयोगी प्रारम्भिक संकेत हइ; मुदा विषयपर बल, प्रतिप्रश्न, कथावाचकक मोड़ आ संवादक लयक कारण अन्य क्रम सेहो स्वाभाविक हो सकैत हइ।

मूल पाठ — लम्ब-लम्ब हिन्दी प्रशासनिक संज्ञा-संयुक्त पद बज्जिकाक मूल लयकें दबा दैत हइ। एहन वाक्यकें ककरा की भेल, के की कहल, कियैक घटना बदलल—एहि रूपें स्पष्ट क्रियापरक कथनमे फेर गढ़ू।

मूल पाठ — अनुच्छेदक प्रत्येक वाक्य आगाँक वाक्यसँ अर्थमे जुड़ल रहय; मात्र बहुत ठेठ शब्द राखि देब साहित्यिक प्रवाह नहि। क्षेत्रीय शब्द चुनबाक संग कथ्यक क्रम आ पाठकक बोध जाँचू।

वाक्यक संरचना केवल पदक्रम नहि, सूचना-केंद्र, निषेध, प्रश्न आ उपवाक्य-संबंधक क्रियाशील संयोजन अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — वास्तविक पाठसँ कर्ता-कर्म-क्रिया, विराम आ परोक्ष कथनक भेद जाँचल जाए। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

१३. शब्दचयन आ साझा भाषिक विरासत

मूल पाठ — प्राथमिकता—ठेठ बज्जिका रूप; तकर बाद मिथिला क्षेत्रक प्रचलित साझा लोक-शब्द; तकर बाद प्रमाणित मैथिली-सन्निकट बज्जिका विकल्प; तकर बाद शास्त्रीय/वैज्ञानिक पारिभाषिक पद। किछु ऋणशब्द बज्जिकामे स्वाभाविक भऽ चुकल हइ; शुद्धताक नामपर ओकर मनमाना निषेध नहि।

मूल पाठ — भोजपुरी सम्पर्कसँ हालमे लोकप्रिय भेल शब्द आ बज्जिकामे पुरानसँ मौजूद साझा शब्दक भेद राखू। केवल पड़ोसी भाषामे भेटैत हइ से कहि ककरो शब्द काटि देब दोषपूर्ण सम्पादन हइ।

मूल पाठ — गाम, बाढ़ि, नदी, खेती, हाट, विवाह, जातीय काज, खाद्य-पदार्थ, धिया-पुता आ लोकगीतक वस्तुनिष्ठ शब्दावलीक अर्थ पहिने बुझू। अज्ञात पेशागत शब्द लेल मनगढ़न्त अर्थ नहि लिखू।

शब्दक अर्थ, पद-श्रेणी आ प्रयोगक्षेत्रकें स्थिर कोशीय लेबलमे सीमित करब कठिन अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — सहप्रयोग, वाक्य-सन्दर्भ, क्षेत्रविशेष आ ऐतिहासिक स्रोत जाँचिकऽ निर्णय करब समीचीन अछि। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

१४. मुहावरा, लोकोक्ति आ पुनरुक्ति

मूल पाठ — मुहावरा अपन अर्थ, प्रसंग आ सामाजिक रंग संग अबैत हइ।

हिन्दी वा भोजपुरीक मुहावरा शब्दशः बदलि देलासँ बज्जिकाक लोकभाषिक अर्थ नहि बनत। पहिने आशय बुझू; प्रमाणित बज्जिका प्रयोग भेटय तँ अपनाउ; नहि भेटय तँ सरल गद्यक वाक्य लिखू।

मूल पाठ — दोहराव, ध्वन्यात्मक जोड़ि आ लोककथाक तय रूप सजावट मात्र नहि हइ; ओ पात्रक भाव, घटनाक गति आ सांस्कृतिक स्मृतिक हिस्सा हो सकैत हइ। संपादकीय सरलीकरणमे ई तत्व नष्ट नहि करबाक चाही।

मूल पाठ — लोकगीत, विवाहगीत, कहावत, शोकगीत आ नाटकक पाँति मूल स्रोतसँ मिलाकऽ छाप्पू। मानक रूप अलग देबाक हो तँ 'सम्पादकीय पाठ' कहि स्पष्ट पृथक् प्रस्तुत करू।

१५. लेखक-वर्णन आ संवादक अन्तर

मूल पाठ — लेखक-वर्णनक रूप सामान्यतः स्थिर, स्पष्ट आ पाठक-अनुकूल रहत। संवादमे पात्रक क्षेत्र, उमेर, पेशा, निकटता, सम्मान, क्रोध वा स्नेहक फराक व्यक्त भऽ सकैत हइ। लेखक-वर्णनमे अनायास घुसल संवादक बाहरी बोलीकें संशोधनक संकेत मानू।

मूल पाठ — कोनो पात्र जँ भोजपुरी, हिन्दी, मैथिली वा अंग्रेजीक संग बज्जिका मिलाबैत हइ, तँ ओकर सामाजिक कारण कथाक भीतर देखायल चाही; नहि तँ ओ लेखकक असावधानी प्रतीत होयत।

मूल पाठ — लिखित भाषा आ बोलल भाषा बीचक अन्तर पहिने पहिचानू। पाठकक सुविधा लेल संवादकें पूर्ण मानक बना देब अथवा हर शब्दक सूक्ष्म उच्चारण अंकित करब, दुनू अतिशयताकें टारू।

१६. अनुवाद आ रूपान्तर

मूल पाठ — अनुवादक पहिल चरण मूल गद्यक अर्थ, समय, सामाजिक सम्बन्ध, वक्ताक भाव आ मुहावराक प्रयोजन बुझब हइ। तकर बाद बज्जिकाक क्रिया, सर्वनाम आ पदसम्बन्धमे नव वाक्य रचू। शब्दसँ शब्दक बदला सँ अनुवाद पूरा नहि होइत हइ।

मूल पाठ — बाहरी नाम, संस्था, कानून, वैज्ञानिक पद आ शीर्षक मूल पहिचान सहित रहि सकैत हइ; ओकर व्याख्या सहज बज्जिकामे करू। पाठमे एके अवधारणाक नाम बारम्बार बदलि देब शोध-सन्दर्भमे दोष हइ।

मूल पाठ — अन्तिम चरणमे मूल अर्थ आ बज्जिका रचना मिलाउ: कोनो दावा हटि गेल? समय बदलि गेल? पात्रक आदर बदलल? अनुवादक हिन्दी ढाँचा बचल अछि? ई चारि प्रश्न अनिवार्य हइ।

शब्द-प्रतिशब्द समानता अनुवादक पर्याप्त कसौटी नहि; अर्थ, विधा, लक्षित पाठक आ सांस्कृतिक संकेत साथ रहैत अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — स्रोत आ लक्ष्यपाठक समानान्तर खण्डसँ अर्थ-हानि, अनावश्यक विस्तार आ शैली-विचलन चिन्हब जरूरी अछि। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

१७. शोध, समाचार आ शिक्षा

मूल पाठ — शोधलेखनमे प्रमाण आ व्याख्या अलग रह्य। साहित्यिक पात्रक कथनकें स्वतः ऐतिहासिक तथ्य मानब अनुचित हइ। क्षेत्रीय शब्द, रचना, प्रकाशित संस्करण, पृष्ठ, मौखिक साक्षात्कार आ वक्ताक परिचय जहाँ उपलब्ध हो, स्पष्ट लिखू।

मूल पाठ — समाचार गद्य छोट, स्पष्ट, स्रोत-चिह्नित आ पक्ष-विचारसँ अलग तथ्यप्रधान होयत। शिक्षा लेल उदाहरण सहज रह्य; तकनीकी शब्दकें पहिल प्रयोगमे बुझाउ।

मूल पाठ — बज्जिकामे कठिन शास्त्रीय पदक आवश्यकता पड़ला पर स्वीकार करू; मुदा पाठककें उपयोगी सरल परिभाषा दियौ। केवल 'शुद्ध' देखाय लेल अपरिचित शब्द गढ़ब निष्ठापूर्ण लेखन नहि।

१८. डिजिटल पाठ, फाइल आ मुद्रण

मूल पाठ — युनिकोड देवनागरी, चुनल जा सकय एहन पाठ, स्थिर अनुच्छेद-शैली, सही शीर्षक-स्तर आ खोज-योग्य PDF प्रकाशनक सामान्य आधार हइ। छवि मात्रमे पाठ बन्द नहि करू।

मूल पाठ — तालिका आ अनुक्रमणिका बनवैत समय शीर्षक-संख्या, पृष्ठ-संख्या, देवनागरी वर्तनी, उद्धरणक चिन्ह, नासिक्य, फाँक आ मात्रा जाँचू। कवरक QR कोडक लक्ष्य-पता अलग-अलग पढ़ि पक्का करू।

मूल पाठ — जँ परिशिष्टमे अप्रमानित रूप अछि, ओकरा ‘पुनर्जाँचक प्रविष्टि’ कहि चिह्नित करू। प्रकाशनपूर्व संस्करण-तिथि, लेखक, स्रोत-सूची, पाठ्याधिकार आ सम्पादनक अवस्थाक स्पष्टता राखू।

१९. भोजपुरी प्रभावक निदान

मूल पाठ — बा/बानी/बाड़े/हवे जकाँ सहायक-क्रियाक निरन्तर शृंखला, भोजपुरी चलचित्रक कृत्रिम सम्बोधन, सर्वनामक अनियन्त्रित बदली आ हिन्दी-बोलीसँ आयल मुहावराक एकत्र उपस्थिति जँ सामान्य बज्जिका कथनमे भेटय, तँ पुनर्जाँच करू। एक शब्द भेटलासँ गलत सिद्ध नहि होइत हइ।

मूल पाठ — जाँचक क्रम ई रहय—स्रोत देखू, क्षेत्र देखू, वक्ता/पात्र देखू, लोकभाषिक पुरान प्रमाण देखू, तकर बादे सुधार करू। आवश्यक ठाम मूल रूप राखू आ टिप्पणीक द्वारा समझाउ।

मूल पाठ — प्रतिस्थापनक पहिल विकल्प ठेठ बज्जिकामे प्रमाणित रूप होयत; तुरन्त मैथिली रूप लगा देब सेहो मूल उद्देश्यक विरुद्ध हइ।

२०. अतिमैथिलीकरणक निदान

मूल पाठ — मैथिलीक अछि/छै, ‘क’ सम्बन्धचिह्न, ‘कै’ कारक अथवा निश्चित नकार केवल मैथिली-समानता देखेबाक लेल बज्जिकामे नहि लगाउ। जँ स्रोतक बज्जिका वक्ता ई रूप स्वाभाविक बज्जिकाक रूपमे प्रमाणित करैत हइ तँ मात्र ओकर प्रयोग समीक्षा योग्य हइ।

मूल पाठ — सामग्री पढ़ि देखू—की ई बज्जिका बोलबाक भाषा जकाँ बुझाईत हइ, अथवा मैथिली गद्यक शब्द-परिवर्तन मात्र? जँ दोसर स्थिति हइ तँ व्याकरणिक ढाँचा फेर बनाउ।

मूल पाठ — मिथिला-अभिमुखता विकल्पक विवेकपूर्ण प्राथमिकता हइ; बज्जिकाक स्वायत्त रूपक नाश नहि। ई भेद पोथीक प्रत्येक नियममे कायम रहत।

२१. प्रयोग-कोश आ तालिका पढ़बाक विधि

मूल पाठ — आगाँक सारणीमे ‘प्राथमिक’, ‘सामान्य मानक नहि’, ‘सन्दर्भविशेष’ तीन श्रेणी अछि। एतय वर्जित रूपक सूची सर्वकालिक निषेध नहि; ओ रूप उद्धरण, लोकगीत आ सीमा-क्षेत्रक संवादमे अर्थपूर्ण हो सकैत हइ।

मूल पाठ — प्रत्येक प्रविष्टि जाँचैत समय अर्थ, व्याकरणिक भूमिका, क्षेत्र, स्रोत आ लेखक-वर्णन वा संवादक स्तर लिखू। ‘प्राथमिक’ शब्द भी साक्ष्यक सीमामे समझू; नब लोकभाषिक प्रमाण आवला पर विवेकपूर्ण परिवर्तन सम्भव हइ।

मूल पाठ — मूल संस्करणक दूनू सारणी संरक्षित कएल गेल हइ; शीर्षकसभकें स्थानीय पाठक लेल स्पष्ट कएल गेल अछि। एतय प्रस्तुत पुरान रूपसभ स्रोतगत सूची हइ, सर्वेक्षणक सार्वभौमिक निष्कर्ष नहि।

भाषाक वास्तविक प्रयोग नियमक अपवाद नहि, कतेको बेर नियमक सीमा स्पष्ट करैत अछि। प्रमाणित स्थानीय भाषिक व्यवहार, लेखक-वर्णन, ऐतिहासिक उद्धरण आ पात्रक संवाद एक-दोसराक प्रतिस्थापन नहि अछि।

पद्धतिगत समीक्षा — उद्धरण, संवाद, शिक्षण आ शोधमे एकहि रूपक भिन्न स्वीकृति-स्थिति सुस्पष्ट राखू। सम्पादकीय निर्देशकें समस्त भाषिक समुदाय पर सार्वभौम नियमक रूपमे प्रस्तुत करब गलत होएत।

२२. निर्णयक पाँच प्रश्न

मूल पाठ — पहिल—की रूप बज्जिकाक पुरान अथवा जीवित प्रयोगमे प्रमाणित हइ? दोसर—की दू स्वाभाविक विकल्प अछि? तेसर—की रूप हालक भोजपुरी सम्पर्कसँ आयल हइ? चारिम—की केवल मैथिली मानकीकरणक नामपर बाहरी रूप चढ़ल हइ? पाँचम—की अर्थ, स्थान वा क्रियारूपक प्रमाण एखन अधूरा हइ?

मूल पाठ — पहिल प्रश्नक उत्तर हँ हो तँ स्रोत आ रजिस्टर सहित प्रयोग राखू। दोसरमे मिथिला-निरन्तरतासँ मेल खाइत प्रमाणित विकल्प चुनू। तेसर आ चारिममे स्वतः बदलाव नहि, स्रोतगत जाँच करू। पाँचममे अनुमानसँ नियम नहि बनाउ।

मूल पाठ — ई निर्णय-प्रक्रिया लिखित सम्पादन-सूचीमे रखला पर भविष्यक सुधारक कारण बुझल जा सकैत हइ आ पहिनुक मानक बिना वजह डगमगाएत नहि।

२३. प्रकाशन-पूर्व अन्तिम परीक्षण

मूल पाठ — पहिने सामग्रीक अर्थ, स्रोत, पात्र, उद्धरण आ संशोधित पाठक अखण्डता मिलाउ। फेर बज्जिकाक क्रिया, सर्वनाम, नकार, सम्बन्धचिह्न, क्षेत्रीय शब्द आ वाक्यलयक जाँच करू। तकर बाद शब्दरूप आ विरामचिह्न तथा फाइलक पृष्ठ-विन्यास जाँचू।

मूल पाठ — जतय निर्णय केवल अनुमानपर आधार राखैत हइ, ओतय स्रोत-साक्ष्य खोजल जाए अथवा मुद्रणसँ पहिले अनिश्चित प्रविष्टि हटाओल जाए। मूल साहित्यिक उद्धरणक भीतर मनचाहा वर्तनी-सुधार नहि करू।

मूल पाठ — अन्तिम सम्पादकीय स्वीकृतिमे पूछल जाए—ई बज्जिका मूल स्वभावमे हइ? पाठक सहज बुझैत हइ? शैक्षिक अथवा शोध-अर्थ स्पष्ट हइ? लेखक आ स्रोतक अधिकार सुरक्षित हइ? डिजिटल फाइल खोजल/पढ़ल जा सकैत हइ?

परिशिष्ट . स्रोतगत सारणी आ दस्तावेजी उदाहरण

मूल पाठ — अग्रिम सारणीसभ संलग्न मूल निर्देशिकासँ ली गेल अछि। एतय दर्ज विकल्प, संकेत आ अर्थक प्रमाण-स्थिति एकसमान नहि मानल जाय। मूल अंग्रेजी अर्थलेबल जहाँ अछि, ओ स्रोतगत अभिलेखक अंग अछि; मुख्य लेखनक भाषा-मानक नहि।

स्रोत-पञ्जी आ सम्पादकीय टिप्पणी

मूल पाठ — मुख्य मूल स्रोत : Videha Bajjika Style Manual, Version 2.0 (संलग्न पाण्डुलिपि)।

मूल पाठ — गजेन्द्र ठाकुर, मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा विज्ञान टेठी-अंगिका आ बज्जिकाक संग लऽ कऽ — मूल निर्देशिकामे उल्लिखित भाषा-संरचनाक स्रोत।

मूल पाठ — तुलनात्मक सम्पादन-पद्धतिक स्रोत : भाषापाक; इग्नू मैथिली आधार पाठ्यक्रम। ई स्रोतसभकेँ सम्बन्धित भाषाक विशिष्ट क्रियारूपक प्रमाण नहि मानल गेल अछि।

मूल पाठ — प्रत्येक वास्तविक संपादकीय सुधारक बाद संस्करण-संकेत, मूल पाठ, संशोधित पाठ आ कारणक अभिलेख राखब उचित हइ। नव मानकक दावा लेल प्रत्यक्ष भाषिक प्रमाण अपेक्षित रहत।

तेसर भाग — समस्त उपशीर्षक आ तालिकाक विषय-पञ्जी

संवाद, लेखक-वर्णन आ लोक-स्रोतक रजिस्टर

मूल मानक रूप-विकल्प-सन्दर्भ सारणी

स्रोतगत सारणीसभक आवरण

सारणी १ : ६ पङ्क्ति × ३ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — रजिस्टर · प्रयोग · सम्पादकीय व्यवहार | Neutral literary · कथा, निबन्ध, समाचार, सामान्य गद्य · सबसे स्थिर house standard | Colloquial/local · संवाद, संस्मरण, oral texture · स्थानीय variant स्वीकार्य

सम्पादकीय परीक्षण — सारणीक कोनो रूपक प्रसंग, क्षेत्र आ स्रोतगत दर्जा बुझल बिना ओकरा स्वतः सार्वभौम शब्दरूप नबनाओल जाए।

सारणी २ : २१ पङ्क्ति × ४ स्तम्भ

मूल सारणीक आरम्भिक संकेत — विषय · प्राथमिक रूप · सामान्य मानक नहि · सन्दर्भविशेष विकल्प | Language identity · ठेठ बज्जिका रूप · भोजपुरीकेँ “standard” मानि रूप बदलनाइ · भाषावैज्ञानिक तुलना | Standardising direction · बज्जिका → मिथिला/मैथिली-सन्निकट विकल्प · बज्जिका → भोजपुरी media-form · सीमा-क्षेत्रक लेखन

सम्पादकीय परीक्षण — सारणीक कोनो रूपक प्रसंग, क्षेत्र आ स्रोतगत दर्जा बुझल बिना ओकरा स्वतः सार्वभौम शब्दरूप नबनाओल जाए।

अन्तिम भाग — भाषा-स्वायत्तता आ शैली-निर्णय

बज्जिकामे निकटवर्ती भाषा आ क्षेत्रक सम्पर्केँ प्रमाणित उदाहरणकेँ हटा देबाक अनुमति नहि मानू; एके रीतिसँ हिन्दी वा मैथिलीक अनधिकृत संरचना आरोपित नहि करू। ई खण्ड मूल शैली-नियम आ मूल स्रोतसाक्ष्यक अधिकार अलग राखैत अछि।

सन्दर्भ-सूची

मुख्य ग्रन्थ — गजेन्द्र ठाकुर, विदेह बज्जिका लेखन-शैली निर्देशिका (पुनरीक्षित संस्करण, २०२६)।

main — <https://videha-ejournal.github.io/videha/index.htm>

archive — <https://videha-ejournal.github.io/videha/videha.htm>

samagra — <https://www.videha.co.in/gajendra-thakur-samagra.htm>

समापन — बज्जिका लेखनक साहित्यिक अनुशासन ओकर स्थानीय व्याकरण, लोकप्रयोग आ लेखक-वक्ताक स्वरक सम्मानसँ बनैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-५७

बज्जिकाक प्रमाणित स्थानीय स्वर, सर्वनाम, क्रियारूप, वाक्य-चालि, लिखाइ आ साहित्यिक संपादनक स्रोताधारित आलोचनात्मक अध्ययन।

मूल पाठ □ विस्तृत आलोचना □ सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह